سُورَةُ الْمَسَدِ مَكِّيَّةٌ

सूरह मसद मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ط (1)

टूट गए दो (दोनों) हाथ अबू लहब के, और वह (स्वयं) बर्बाद हुआ।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ط (2)

ना उसका धन (माल) उसके काम आया और (ना, वो) जो उसने अर्जित किया।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ج (3)

शीघ्र (जल्द) ही वह झुलसेगा (प्रवेश करेगा) लपटों (ज्वालाओं) वाली आग में।

وَّامْرَاَتُهٗ ط صلے حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ج (4)

और उसकी स्त्री (पत्नी) [भी], ईंधन (लकड़ियाँ) ढोने वाली।

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ع (5)

उसकी गर्दन में मूंज (खजूर की छाल) से (बनी) रस्सी (होगी)।